MAKTABATUL MADINA INDIA

Gyarhavi Sharif Ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 475
Weekly Booklet : 475

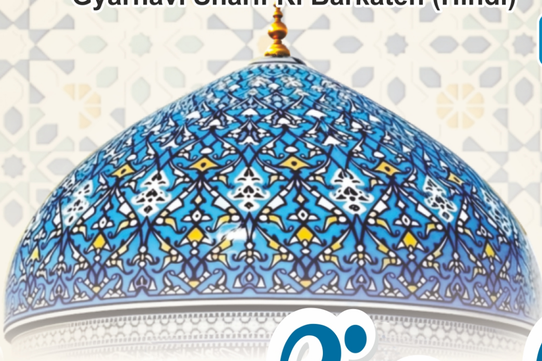

ग्यारहवीं शरीफ़ की बरकतें

(सफ़्हात : 29)

ग्यारहवीं शरीफ़ का मतलब ? 03
500 साल पहले के मुफ़स्सिरे क़ुरआन का इरशाद 15
ग्यारहवीं वाला पीर क्यूं कहते हैं ? 09
आफ़ात व बलिय्यात से हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा 18

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

ग्यारहवीं शरीफ़ की बरकतें

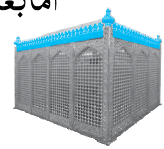

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 29 सफ़हात का रिसाला "ग्यारहवीं शरीफ़ की बरकतें" पढ़ या सुन ले उसे ग्यारहवीं शरीफ़ मना कर उस की बरकतें पाना नसीब फ़रमा, क़ियामत के दिन ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ग़ुलामों में उठा और मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।

اٰمِیْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه : तुम पर मस्जिदों की हाज़िरी और नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ना लाज़िमी है । (الفتح الربانی والفیض الرحمانی، ص23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मौला अ़ली की उ़र्से ग़ौसे आज़म में तशरीफ़ आवरी

ह़ज़रते शाह वलियुल्लाह मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (जो कि वलिए कामिल हैं) फ़रमाते हैं : एक दिन मैं सोया हुवा था, मैं ने ख़्वाब देखा, एक सह़रा है, जिस में एक बड़ा सा चबूतरा है और बहुत सारे औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم उस पर मुराक़बे की ह़ालत में (यानी आंखें बन्द किए, अल्लाह पाक की याद में गुम) बैठे हैं, उस ह़ल्क़े के दरमियान ह़ज़रते ख़्वाजए नक़्शबन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ह़ज़रते ख़्वाजा जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ फ़रमा हैं । मैं ने किसी से पूछा : येह सब औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم यहां क्यूं जमा हैं ? बताया गया : मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते

अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ तशरीफ़ ला रहे हैं, सब उन के इस्तिक़्बाल के लिए हाज़िर हैं। अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ तशरीफ़ ले आए, आप के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उन का हाथ बड़े प्यार से पकड़ रखा था, पूछने पर बताया गया कि येह خَیْرُ التَّابِعِیْن (यानी ताबेई़न में बुलन्द रुत्बा रखने वाले) अ़ज़ीम आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते उवैस क़रनी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ हैं।

ह़ज़रते मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा येह सब कहां जा रहे हैं ? किसी बताने वाले ने बताया : आज ह़ज़रते ग़ौसुस्सक़लैन (शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ) का उ़र्स शरीफ़ है और येह सब बुज़ुर्ग इस तक़रीब में शामिल होने के लिए तशरीफ़ ले जा रहे हैं। (کلمات طیبات (فارسی)، ص 77، 78)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! سُبْحٰنَ اللہ ! दो जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग ह़ज़रते शाह वलियुल्लाह मुह़द्दिस देहल्वी और ह़ज़रते मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِمَا ने गवाही दी कि ग्यारहवीं शरीफ़ की मह़फ़िल में शहन्शाहे विलायत ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ के साथ अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते उवैस क़रनी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ और दीगर बड़े बड़े औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم भी तशरीफ़ लाए। हमें भी चाहिए कि हर साल बल्कि हर माह ग्यारहवीं शरीफ़ का एहतिमाम किया करें।

हम को "ग्यारह" का है अ़दद प्यारा, उन की तारीख़े उ़र्स है ग्यारह
यूं अ़दद हम को प्यारा ग्यारह है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

ग्यारहवीं शरीफ़ का मतलब ?

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आज़म ! ग्यारहवीं शरीफ़ का मतलब है : "सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ईसाले सवाब करना" और ईसाले सवाब का सुबूत क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका से है जैसा कि पारह 28, सूरतुल ह़श्र की आयत नम्बर 10 में इरशाद होता है :

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ (پ28،الحشر:10)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन के बाद आने वाले अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें और हमारे उन भाइयों को बख़्श दे जो हम से पहले ईमान लाए।

इस आयते करीमा की तफ़्सीर में है : मुहाजिरीन और अन्सार के बाद आने वाले अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें और हमारे उन भाइयों को बख़्श दे जो हम से पहले ईमान लाए। याद रहे कि मुहाजिरीन व अन्सार के बाद आने वालों में क़ियामत तक पैदा होने वाले तमाम मुसलमान दाख़िल हैं (जो अपने लिए और उन के लिए बख़्शिश की दुआ़ करते हैं और करते रहेंगे) और उन से पहले ईमान लाने वालों में तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم दाख़िल हैं (जिन के लिए दुआ़ की जा रही है और की जाती रहेगी)। (تفسیر خازن،پ28،الحشر، تحت الآیۃ:10، 4/249)

तफ़्सीरे समरक़न्दी में है : मोमिनीन को चाहिए कि वोह अपने आबाओ अज्दाद और दीनी उ़लूम के असातिज़ए किराम के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ किया करें। (تفسیر بحر العلوم للسمرقندی،پ28،الحشر، تحت الآیۃ:10، 3/345)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : इस से दो मस्अले मालूम हुए : एक येह कि (आदमी) सिर्फ़ अपने लिए दुआ़ न करे, सलफ़ (यानी गुज़रे हुए बुज़ुर्गाने दीन) के लिए भी करे।

दूसरे येह कि बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللهِ عَلَيۡهِم ख़ुसूसन सहाबए किराम और अहले बैते अत्हार के उ़र्स, ख़त्म, नियाज़ और फ़ातिहा आला चीज़ें हैं कि इन में उन बुज़ुर्गों के लिए दुआ हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पा. 28, तह़तल आयह : 10, स. 873)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

"दस्तगीर" के 6 हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के मुतअ़ल्लिक़ 6 अहादीसे मुबारका

ऐ आशिक़ाने औलिया ! ईसाले सवाब के माना हैं : "सवाब पहुंचाना", इस को "सवाब बख़्शना" भी कहते हैं मगर बुज़ुर्गों के लिए "सवाब बख़्शना" कहना मुनासिब नहीं, "सवाब नज़्र करना" कहना अदब के ज़ियादा क़रीब है। फ़ौत होने वालों को जो नेक कामों का सवाब भेजा जाता है वोह उन्हें पहुंचता है जैसा कि सिहाह सित्ता (यानी सहीह तरीन अहादीसे मुबारका की मशहूर छे किताबों) में से बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ जो कि क़ुरआने करीम के बाद सब से ज़ियादा क़ाबिले एतिमाद किताबें हैं, इन दोनों में येह ह़दीसे पाक मौजूद है कि

﴾1﴿ तमाम मुसलमानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنۡهَا फ़रमाती हैं : एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : मेरी वालिदा अचानक फ़ौत हो गई हैं, मेरा ख़याल है कि अगर वोह कोई बात करतीं तो सदक़ा देने का कहतीं, अगर मैं उन की त़रफ़ से ख़ैरात करूं तो क्या उन्हें सवाब मिलेगा ? इरशाद फ़रमाया : "हां"।

(بخاری، 1/468، حدیث:1388۔ مسلم، ص390، حدیث:2326)

﴾2﴿ सहाबिए रसूल ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللهُ عَنۡه ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदा

इन्तिक़ाल कर गई हैं कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है ? इरशाद फ़रमाया : पानी। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कुंवां खुदवाया और फ़रमाया : هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ यानी येह (कुंवां) सअ़द की मां के लिए (सदक़ा) है। (ابو داؤد، 2/180، حدیث:1681)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बुख़ारी व मुस्लिम और अबू दावूद शरीफ़ से साबित होने वाली बातें

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि इन दोनों अह़ादीसे मुबारका से येह बातें मालूम हुईं कि ﴿1﴾ मय्यित के ईसाले सवाब के लिए पानी बेहतरीन सदक़ा है कि कुंवां वग़ैरा खुदवा कर उस का सवाब मय्यित को बख़्श दिया जाए। ﴿2﴾ मय्यित को किसी कारे ख़ैर (यानी नेक काम) का सवाब बख़्शना बेहतर है। ﴿3﴾ सवाब बख़्शने के अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा करना सहाबी की सुन्नत है। ﴿4﴾ खाना या शीरीनी (यानी मिठाई) वग़ैरा को सामने रख कर ईसाले सवाब करना जाइज़ है, इस लिए कि ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इशारए क़रीब का लफ़्ज़ इस्तिमाल करते हुए फ़रमाया "هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ" येह कुंवां सअ़द की मां के लिए है। यानी ऐ अल्लाह पाक ! इस कुंएं के पानी का सवाब मेरी मां को अ़ता फ़रमां। इस से मालूम हुवा कि कुंवां उन के सामने था। (जो खाना सामने रख कर ईसाले सवाब करने से मना करते हैं उन्हें इस रिवायत से दर्स ह़ासिल करना चाहिए।) ﴿5﴾ ग़रीब व मिस्कीन को खाना वग़ैरा देने से पहले भी ईसाले सवाब करना जाइज़ है। जैसा कि सह़ाबिए रसूल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने किया कि कुंवां तय्यार होने के साथ ही उन्हों ने ईसाले सवाब किया ह़ालांकि लोगों के पानी इस्तिमाल करने के बाद सवाब मिलेगा। इसी त़रह़ अगर्चे ग़रीब व मिस्कीन को खाना देने पर सवाब मुरत्तब होगा लेकिन उस सवाब को पहले ही से बख़्श देना

भी जाइज़ है। ﴾6﴿ किसी चीज़ पर मय्यित का नाम आने से वोह चीज़ ह़राम न होगी मसलन ग़ौसे पाक का बकरा और ग़ाज़ी मियां का मुर्ग़ा वग़ैरा इस लिए कि एक जलीलुल क़द्र सह़ाबी ने उस कुंएं को अपनी मर्ह़ूमा मां के नाम से मन्सूब किया था जो आज तक "بِیۡرِاُمِّ سَعۡد" ही के नाम से मश्हूर है। (انوار الحدیث، ص230)

फ़ौत होने वालों को सवाब पहुंचता है

﴾3﴿ ख़ादिमे नबी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मैं ने अ़र्ज़ की : हम अपने फ़ौत होने वालों के लिए दुआएं और उन की त़रफ़ से सदक़ात व ख़ैरात और ह़ज करते हैं, क्या येह चीज़ें उन को पहुंचती हैं ? तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक येह चीज़ें उन को पहुंचती हैं और वोह उन से ख़ुश होते हैं जैसे तुम में से कोई एक दूसरे के तोह़फ़े (Gift) से ख़ुश होता है। (عمدۃ القاری، 6/305، تحت الحدیث:1388)

﴾4﴿ फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम में से कोई नफ़्ली सदक़ा करे तो अपने वालिदैन की त़रफ़ से करे यूं उस (सदक़े) का सवाब उन के लिए होगा और इस (सदक़ा करने वाले) के सवाब में भी कुछ कमी नहीं की जाएगी। (معجم اوسط، 5/394، حدیث:7726)

अपने मर्ह़ूमीन को तोह़फ़े भेजा करो

﴾5﴿ ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه रिवायत करते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : जब किसी घर के अफ़राद में से कोई शख़्स फ़ौत हो जाता है और उस के बाद उस घर वाले (सवाब पहुंचाने के लिए) अपने फ़ौत होने वाले की त़रफ़ से सदक़ा करते हैं तो ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْهِ السَّلَام उसे नूर के थाल (Platter) में तोह़फ़ा बना कर रखते हैं,

फिर क़ब्र के किनारे खड़े हो कर फ़रमाते हैं : ऐ गहरी क़ब्र वाले ! येह तोह़फ़ा है जो तेरे घर वालों ने तेरी त़रफ़ भेजा है उसे क़बूल कर। फिर वोह तोह़फ़ा उसे दे दिया जाता है तो वोह बहुत ख़ुश होता है और उस के वोह पड़ोसी (मुर्दे) ग़मगीन हो जाते हैं जिन्हें कोई तोह़फ़ा नहीं भेजा गया होता। (معجم اوسط،5/37،حدیث:6504)

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

जाने वालों से राबित़ा रखना   दोस्तो ! रस्मे फ़ातिह़ा रखना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़िरिश्ते ईसाले सवाब करते हैं

﴾6﴿ फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : अल्लाह पाक अपने हर मोमिन बन्दे पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमाता है जो उस का अ़मल लिखते हैं। जब वोह बन्दए मोमिन इस दुनिया से चला जाता है तो येह अ़र्ज़ करते हैं कि ऐ रब ! (हमारा काम ख़त्म हो गया, वोह शख़्स दारे आमाल (यानी दुनिया) से निकल गया,) इजाज़त दे कि हम आस्मान पर आएं (और तेरी इ़बादत करें)। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : मेरे आस्मान इ़बादत करने वालों से भरे हैं। अ़र्ज़ करते हैं : इलाही ! हमें ज़मीन में जगह दे। इरशाद होता है : मेरी ज़मीनें इ़बादत करने वालों से भरी हैं। अ़र्ज़ करते हैं : "इलाही ! फिर हम कहां जाएं ?" इरशाद होता है : मेरे बन्दे की क़ब्र के सिरहाने खड़े हो कर तस्बीह़ व तह़मीद और तक्बीर व तहलील करते रहो और उसे क़ियामत तक मेरे बन्दे के लिए लिखते रहो।

(شعب الایمان،7/184حدیث:9931, मलफ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 363)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सह़ाबए किराम भी ईसाले सवाब करते थे

जन्नती जवानों के सरदार ह़सनैने करीमैन ह़ज़रते इमामे ह़सन व ह़ुसैन

رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ की शहादत के बाद उन की त़रफ़ से (यानी उन्हें सवाब पहुंचाने के लिए) ग़ुलाम आज़ाद करते थे। (مصنف ابن ابی شیبہ،7/485،حدیث:12214)

आज से तक़रीबन पांच सौ साल से भी पहले के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग, ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ लिखते हैं : सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم मय्यित की त़रफ़ से (यानी उन के ईसाले सवाब के लिए) सात दिन तक खाना खिलाया करते। (الحاوی للفتاوی،2/178)

सह़ाबिए नबी ने ख़ुद ईसाले सवाब करने का हुक्म दिया (वाक़िआ)

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन दिरहम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ह़ज करने जा रहे थे कि एक साह़िब (यानी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ) मिले और पूछने लगे : क्या तुम से कोई क़रीब बस्ती है जिसे "उबुल्लतुन" कहा जाता है ? हम ने कहा : जी हां। (येह सुन कर) उन्हों ने फ़रमाया : तुम में कौन इस बात की ज़मानत देता है कि (उस बस्ती में मौजूद) मस्जिदे अ़श्शार में मेरे लिए दो या चार रक्अ़तें नमाज़ पढ़ दे और कह दे कि "هٰذِهٖ لِاَبِیْ هُرَیْرَةَ" यानी येह (नमाज़) अबू हुरैरा के लिए है। (ابوداؤد،4/153،حدیث:4308)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस से येह भी मालूम हो रहा है कि मुबारक मक़ामात पर इ़बादत करना, नमाज़ अदा करना ज़ियादा सवाब का बाइ़स है और बदनी इ़बादात का सवाब दूसरे को देना भी जाइज़ और अक्सर उ़लमाए किराम की येही राय है, रहा मुआ़मला इ़बादते मालिया (यानी सदक़ा व ख़ैरात करने) का तो वहां सवाब का बख़्शना बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है।" (اشعۃ اللمعات(اردو)،6/425)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक की शर्ह में लिखते हैं : कोई नेकी कर के किसी दूसरे को इस तरह सवाब बख़्शना कि ख़ुदाया इस का सवाब फ़ुलां को मिले बिल्कुल जाइज़ (बल्कि) सुन्नते सहाबा है। लिहाज़ा फ़ातिहा मुरव्वजा (यानी जो मुआशरे में ईसाले सवाब करने का तरीक़ा राइज है) ख़त्म शरीफ़ वग़ैरा बिल्कुल दुरुस्त है, देखो हज़रते अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه) सवाब बख़्शने के अल्फ़ाज़ बता रहे हैं। चौथे येह कि अपने से बड़े को सवाब भेजना जाइज़ है अगर्चे वोह कैसी ही शान का मालिक हो, देखो जनाब अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه) सहाबी हैं और ताबेईन को अपने लिए ईसाले सवाब का हुक्म दे रहे हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 7/250 बित्तग़य्युर)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ग़ौसे पाक को ग्यारहवीं वाला पीर क्यूं कहते हैं ?

क्या आप जानते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की फ़ातिहा दिलाने (यानी इस्लामी महीने की ग्यारह तारीख़ को ईसाले सवाब करने) को ग्यारहवीं शरीफ़ क्यूं कहते हैं ? दर अस्ल आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारहवीं रात की निस्बत से ग्यारहवीं के दिन बड़ी शान से अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ईसाले सवाब के लिए खाना पका कर ग़रीबों और मिस्कीनों को खिलाया करते थे और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह मामूल शरीफ़ उ़म्र भर रहा। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को भी इसे जारी रखने की वसिय्यत फ़रमाई, इसी निस्बत से आप "ग्यारहवीं वाले पीर" के नाम से मश्हूर हुए।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, 1/177। सवानेहे ग़ौसे आज़म, स. 19)

“बारहवीं” वाले आक़ा का फ़ैज़ान है “ग्यारहवीं शरीफ़”

“ग्यारहवीं शरीफ़” का एक और बड़ा ईमान अफ़रोज़ सबब येह भी लिखा है कि हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारहवीं शरीफ़ (यानी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मीलाद शरीफ़) बहुत पाबन्दी से किया करते थे, एक दिन नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : अ़ब्दुल क़ादिर ! तुम ने हमें बारहवीं से याद किया, हम तुम्हें ग्यारहवीं देते हैं।

येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ बयान करने के बाद ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : चूंकि येह सरकारी अ़तिय्या (यानी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से मिलने वाला तोह़फ़ा) है, इस लिए (येह तोह़फ़ा यानी ग्यारहवीं शरीफ़ के ज़रीए ग़ौसे पाक को ईसाले सवाब करने का सिल्सिला) तमाम दुनिया में फैल गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सदियां गुज़र जाने के बाद भी अब तक ग़ुलामाने ग़ौसे आज़म रबीउ़ल आख़िर में ख़ुसूसन और इस के इ़लावा हर इस्लामी महीने की 11 तारीख़ को ज़ौक़ो शौक़ के साथ “ग्यारहवीं शरीफ़” का एहतिमाम करते हैं। (जा अल ह़क़, स. 220-बरकाते ग्यारहवीं, स. 20)

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आज़म
तुम्हें वस्ल बे फ़स्ल है शाहे दीं से दिया ह़क़ ने येह मरतबा ग़ौसे आज़म

(ज़ौक़े नात, स. 181)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आज़म ! हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को खाना खिलाना पसन्द था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने तमाम नेक कामों के बारे में ग़ौर किया तो खाना खिलाने और अच्छे अख़्लाक़ से अफ़ज़ल और बेहतर किसी को नहीं पाया।

(क़लाइदुल जवाहिर (उर्दू), स. 154)

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मौलाना जमीलुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं :

तेरे जद की है बारहवीं ग़ौसे आज़म मिली है तुझे ग्यारहवीं ग़ौसे आज़म

(क़बालए बख़्शिश, स. 166)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ातिह़ा व नियाज़ वाला खाना बा बरकत हो जाता है

ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर किसी बुज़ुर्ग की रूह़े पाक को ईसाले सवाब करने के लिए मालीदा (यानी रोटी के छोटे छोटे टुकड़े, जो शक्कर और घी में मिला कर ह़ल्वा बनाते हैं), दूध और चावल पका कर फ़ातिह़ा पढ़ी जाए तो कोई मुज़ायक़ा नहीं, जाइज़ है । (फ़तावा अ़ज़ीज़ी, स. 39) एक और जगह फ़रमाते हैं : जिस खाने का सवाब ह़ज़रते इमामैन (यानी ह़ज़रते इमाम ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को पहुंचाया जाए और इस पर सूरतुल फ़ातिह़ा, सूरतुल इख़्लास और दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए वोह खाना तबर्रुक (यानी बरकत वाला) हो जाता है, उस का खाना बहुत बेहतर है । (फ़तावा अ़ज़ीज़ी, स. 71)

खाने पर तिलावत की बरकत

सिल्सिलए सोहरवर्दिया के बानी, ह़ज़रते शिहाबुद्दीन अबू ह़फ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का मामूल था कि खाना खाने से पहले वोह क़ुरआने करीम की किसी सूरत की तिलावत शुरू कर देते जो उन को उस वक़्त याद होती यहां तक कि (उस तिलावत की बरकत से) खाने के अज्ज़ा ज़िक्र कर के नूर से भर जाते । (عوارف المعارف، ص202)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम, अह़ादीसे मुबारका और सह़बाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अ़मल से येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो जाती है कि अपने फ़ौत होने वालों के लिए दुआ़ए मग़्फ़िरत करना और कोई नेकी कर के उस का सवाब उन को भेजना जाइज़ है । क़ुरआने करीम, तफ़ासीर, अह़ादीस और उ़लमाए किराम के इरशादात ने फ़ौत होने वालों के लिए ईसाले सवाब के कई त़रीक़ों को बहुत साफ़ त़ौर पर वाज़ेह़ कर दिया ।

याद रखिए ! इ़बादत सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह पाक की ही की जाती है और इस इ़बादत पर अल्लाह पाक की रह़मत से मिलने वाला सवाब अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ कर के अपने मर्ह़ूमीन को पहुंचाने का अ़र्ज़ किया जाता है । इस लिए येह कहना कि "**फ़ौत होने वालों को सवाब नहीं पहुंचता**", येह बात क़ुरआने करीम, सह़ीह़ अह़ादीसे मुबारका और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और 1400 सौ साल से जारी उम्मते मुस्लिमा के त़रीक़एकार के बिल्कुल ख़िलाफ़ है । हां येह बात ज़रूर है कि ईसाले सवाब करने में कोई ना जाइज़ या ख़िलाफ़े शरीअ़त काम शामिल नहीं होने चाहिएं, जैसा कि उजरत पर क़ुरआने करीम पढ़वाना कि इस से ईसाले सवाब तो क्या होगा, उल्टा येह काम करने वाला गुनहगार होगा ।

ईसाले सवाब से रोकना शैत़ानी काम है

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! बन्दा अपने किसी भी नेक काम का सवाब "**ईसाल**" कर सकता है और अल्लाह पाक की रह़मत से वोह सवाब जिस ज़िन्दा या फ़ौत होने वाले को भेजा जाए उसे पहुंचता है । जब सवाब पहुंचाने वाली ज़ात अल्लाह पाक की है तो फिर सवाब पहुंचने में क्या मुश्किल है ? याद रखिए ! बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के आरास पर जो फ़ातिह़ा वग़ैरा का सिलिसला किया

जाता है वोह बहुत अच्छा और सवाब का काम है और उस में ह़िस्सा लेना भी सवाब का काम है, ऐसे ही अपने किसी मर्हूम की बर्सी (यानी सालाना फ़ातिह़ा वग़ैरा) में ख़त्म शरीफ़ या ईसाले सवाब का सिल्सिला करने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं। जो नादान इस काम को नाजाइज़ या गुनाह कहते हैं उन्हें चाहिए कि वोह इस से तौबा करें और जो मुसलमान इस नेक काम में शामिल होते हैं उन्हें हरगिज़ हरगिज़ इस नेक काम से न रोकें क्यूंकि नेकी के काम से रोकना शैत़ान का काम है। बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा में तिलावते क़ुरआने करीम, नात ख़्वानी, ज़िक्रो अज़्कार और खाना खिलाने का सिल्सिला होता है और अह़ादीसे मुबारका में इन सब कामों के बड़े फ़ज़ाइल आए हैं, अब खाना सामने रख कर येह काम करने से कौन सी ख़राबी लाज़िम आती है ? यक़ीनन ऐसा कुछ नहीं है और इन नेक कामों से रोकने वाला इन्सान अच्छा नहीं। अगर क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे करीमा सुनने के बाद भी किसी को ईसाले सवाब करना समझ नहीं आता तो फिर उसे अपनी समझ का इलाज करवाना चाहिए। वैसे भी अ़वाम में एक जुम्ला मशहूर है "मर गया मर्दूद न फ़ातिह़ा न दुरूद"। लिहाज़ा ग्यारहवीं शरीफ़ करना, फ़ातिह़ा करना, ख़त्मे क़ुरआन करना, लंगर खिलाना, सबील लगाना (यानी पानी पिलाना), सदक़ा करना, ग़ुलाम आज़ाद करना, ह़ज और दीगर नेक आमाल इस निय्यत से करना कि उन का सवाब ह़ज़रते ग़ौसे आज़म शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه या फ़ौत होने वाले दीगर मुसलमानों को पहुंचे न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि मुसलमानों की आपसी मह़ब्बतों और फ़ायदा पहुंचाने का एक मुबारक ज़रीआ़ है। अल्लाह पाक हमें अपने मर्हूमीन के लिए दुआ़, सदक़ा और ईसाले सवाब का ख़ूब एहतिमाम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

ग्यारहवीं शरीफ़ से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गों के इरशादात

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आज़म ! सय्यिदी व मुर्शिदी, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की ग्यारहवीं शरीफ़ करने का रवाज सिर्फ़ बर्रे सग़ीर में ही नहीं है बल्कि पूरी दुनिया में सदियों से बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم और उन के चाहने वाले इस बा बरकत तक़रीब का एहतिमाम करते आए हैं जैसा कि

﴾1﴿ तक़रीबन साढ़े चार सौ साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते शैख़ अमानुल्लाह पानीपती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का तज़्किरा करते हुए ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : शैख़ ह़ज़रते अमानुल्लाह पानीपती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ग्यारह रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ को ह़ज़रते ग़ौसुस्सक़लैन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का उ़र्स मुबारक किया और जो खाना आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने पकवाया था उसी दिन वोह सब तक़्सीम कर दिया। (اخبار الاخیار، ص242)

रखता है जो ग़ौसे आज़म से नियाज़ होता है ख़ुश उस से मौला बे नियाज़

(क़बालए बख़्शिश, स. 142)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

तक़रीबन 400 साल पहले ग्यारहवीं शरीफ़ मनाने वाले बुज़ुर्ग

﴾2﴿ तक़रीबन 400 साल पहले हिन्द में इ़ल्मे ह़दीस आ़म फ़रमाने वाले अ़ज़ीम मुह़द्दिस ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बेशक हमारे मुल्क (यानी हिन्द) में आज कल (शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की) ग्यारहवीं तारीख़ मश्हूर है और येही तारीख़ आप की हिन्दी औलाद और बुज़ुर्गों में मुतआ़रफ़ है। (ماثبت من السنۃ(اردو)،ص319) शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के उस्तादे मोह़तरम और अपने वक़्त के वलिए कामिल ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी मक्की رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ भी ग्यारहवीं

शरीफ़ की फ़ातिहा दिलाया करते थे और उन के बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم भी।

(सीरते ग़ौसुस्सक़लैन,स. 221)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बग़दाद शरीफ़ में मज़ारे ग़ौसे पाक पर बादशाहे वक़्त की ह़ाज़िरी

﴾3﴿ तक़रीबन दो सौ साल से भी पहले के बहुत बड़े बुज़ुर्ग और हिन्द के बड़े बड़े उ़लमाए किराम के उस्ताज़ुल ह़दीस ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहल्वी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ सरकारी त़ौर पर (यानी गवर्नमेंट के तह़त) ग्यारहवीं शरीफ़ मनाए जाने का सुबूत पेश करते हुए फ़रमाते हैं : हर ग्यारहवीं शरीफ़ को बादशाह और शहर के बड़े बड़े लोग हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के मज़ार मुबारक पर जमा होते हैं। नमाज़े अ़स्र के बाद क़ुरआने करीम की तिलावत होती है फिर नमाज़े मग़रिब तक हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की मनाक़िब और सीरत बयान की जाती है, नमाज़े मग़रिब अदा करने के बाद मज़ार मुबारक के सज्जादा नशीन तशरीफ़ लाते हैं और उन के इर्द गिर्द मुरीदीन ह़ल्क़ा बना कर बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह करते हैं। इस पुरकैफ़ मौक़े पर बाज़ ह़ाज़िरीन पर वज्दानी कैफ़िय्यत भी त़ारी हो जाती है। इन नेक कामों के बाद खाना, मिठाई और जो नियाज़ तय्यार की हुई होती है वोह तक़्सीम की जाती है। नमाज़े इ़शा पढ़ कर लोग अपने अपने घरों को रुख़्सत हो जाते हैं। (मल्फ़ूज़ाते अ़ज़ीज़ी, स. 62 मुलख़्ख़सन) अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

500 साल पहले के आ़लिम इब्ने आ़लिम का इरशाद

﴾4﴿ तक़रीबन पांच सौ साल पहले के मुफ़स्सिरे क़ुरआन, वलिए कामिल

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला जीवन رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ (जो कि बादशाह औरंगज़ेब आ़लमगीर رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के उस्ताद भी हैं, उन) के साहिबज़ादे ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ैज़ आ़लम बिन मुल्ला जीवन رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : और इसी क़िस्म (यानी ईसाले सवाब) से ग्यारहवीं शरीफ़ का खाना है जो कि ह़ज़रते ग़ौसुस्सक़लैन अबू मुह़म्मद शैख़ मुह़युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ का उ़र्स मुबारक है। दीगर मशाइख़ का उ़र्स साल के बाद होता है ह़ज़रत ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ का उ़र्से पाक हर माह होता है। (ग्यारहवीं औलिया व उ़लमा की नज़र में, स. 13)

﴾5﴿ ह़ाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ग्यारहवीं शरीफ़ और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم के उ़र्स मुबारक के बारे में फ़रमाते हैं : सवाब पहुंचाने की शक्ल जो इस ज़माने में राइज है किसी एक क़ौम के साथ मख़्सूस नहीं है। ह़ज़रत ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ की ग्यारहवीं, सिवुम (यानी क़ुल शरीफ़, तीजा), दस्वां, बीस्वां, चेहलुम, शशमाही, बर्सी वग़ैरा और तोशए[1] ह़ज़रते शैख़ अह़मद अ़ब्दुल ह़क़ रदुवलवी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ और सह मन्नी ह़ज़रत शाह बू अ़ली क़लन्दर رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ (यानी आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के ईसाले सवाब के लिए तीन अनाज की नियाज़), शबे बराअत का ह़ल्वा और ईसाले सवाब के दूसरे त़रीक़े इसी क़ाइदे पर मब्नी हैं (यानी येह सब चीज़ें उसूली त़ौर पर मना नहीं)।

(फ़ैसला हफ़्त मस्अला, स. 22, 23 – ग्यारहवीं औलिया व उ़लमा की नज़र में, स. 15)

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! देखा आप ने ! बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم और सालिह़ीन (यानी अल्लाह पाक के नेक बन्दों) का ग्यारहवीं शरीफ़ के मौक़े पर तिलावते क़ुरआने करीम, ज़िक्रुल्लाह और खाना खिलाने का मामूल सालहा

1... जो खाना या शीरीनी वग़ैरा किसी वली या बुज़ुर्ग के ईसाले सवाब के लिए तक़्सीम किया जाए।

साल से जारी व सारी है। मुसलमान तो मुसलमान अगर कोई ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी इ़बादात की जान पहचान रखता हो, वोह भी इन कामों को ख़िलाफ़े शरअ़ नहीं कहेगा बल्कि वोह भी येही कहेगा कि मज़हबे इस्लाम में येह काम इ़बादत है।

मज़्कूरा बुज़ुर्गाने दीन और उ़लमाए रब्बानिय्यीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के बयान किए गए अक़्वाल और अन्दाज़ से मालूम हुवा कि ग्यारहवीं शरीफ़ मौजूदा दौर की ईजाद नहीं बल्कि सदियों से जारी व सारी है। बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم और उ़लमाए कामिलीन ने न सिर्फ़ ख़ुद ग्यारहवीं शरीफ़ का एहतिमाम किया बल्कि अपने मुरीदीन और मुतअ़ल्लिक़ीन को भी हमेशा इस नेक काम को करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई।

ग्यारहवीं शरीफ़ का शरई़ हुक्म

इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इ़बारत को आसान अन्दाज़ में पेश किया जाता है, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ग्यारहवीं शरीफ़ मुस्तह़ब (यानी पसन्दीदा काम है अगर करें तो सवाब है न करें तो गुनाह नहीं) है और ईसाले सवाब करने के एतिबार से सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है, सुन्नते क़ौलिया मुस्तह़ब्बा है। (यानी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ईसाले सवाब करने के बारे में फ़रामीन मौजूद हैं।)

(फ़तावा रज़विय्या, 9/605 मुलख़्ख़सन)

ग्यारहवीं शरीफ़ बड़ी बरकत वाली है

ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्हें (यानी औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को) ईसाले सवाब, निहायत बरकत वाला और मुस्तह़ब काम है, इसे अदब की वजह से अ़वाम में **"नज़्रो नियाज़"** कहते हैं, येह नज़्रे शरई़ (यानी शरई़ मन्नत) नहीं जैसे बादशाह को नज़्र

(यानी तोह़फ़ा) देना, इन में ख़ुसूसन "**ग्यारहवीं शरीफ़**" की फ़ातिह़ा निहायत अ़ज़ीम बरकत की चीज़ है। (बहारे शरीअ़त, 1/276, हिस्सा : 1, बतस्हील)

सुल्ताने औलिया को हमारा सलाम हो जीलां के पेश्वा को हमारा सलाम हो

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस महीने (यानी रबीउ़ल आख़िर) में हर मुसलमान अपने घर में ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक सरकारे बग़दाद (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) की फ़ातिह़ा करे, साल भर तक बहुत बरकत रहेगी। अगर हर चांद की ग्यारहवीं शब को यानी दसवीं और ग्यारहवीं तारीख़ की दरमियानी रात को मुक़र्रर पैसों की शीरीनी (यानी मिठाई) मुसलमान की दुकान से ख़रीद कर पाबन्दी से ग्यारहवीं की फ़ातिह़ा दिया करे तो रिज़्क़ में बहुत ही बरकत होगी और اِنْ شَآءَ الله कभी परेशान ह़ाल न होगा। ख़ुद मैं इस का सख़्ती से पाबन्द हूं और بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی इस की ख़ूबियां बे शुमार पाता हूं। وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی ذٰلِكَ।"

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 133 मुल्तक़तन)

आफ़ात व बलिय्यात से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा

ह़दीसे पाक की मश्हूर किताब "मिश्कात शरीफ़" की इस ह़दीसे पाक "**सदक़े में जल्दी करो कि बला इस से आगे नहीं बढ़ती।** (مشکاۃ المصابیح، 1/359، حدیث:1887)" की उर्दू शर्ह़ "मिरआतुल मनाजीह़" में ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : बाज़ लोग आफ़त आते ही मीलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, ख़त्मे ख़्वाजगान, ख़त्मे ग़ौसिया, ख़त्मे बुख़ारी, ख़त्मे आयते करीमा कराते हैं, इन का माख़ज़ येह ह़दीस है कि इन कामों में अल्लाह का ज़िक्र, उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नात शरीफ़ वग़ैरा भी है और सदक़ा भी, ज़िक्रुल्लाह भी दाफ़ेए बला (यानी बलाओं को दूर करने वाला) है और सदक़ा भी। मज़ीद फ़रमाते हैं : (जब कि) बाज़ लोग हमेशा मीलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़,

हर माह ख़त्मे ख़्वाजगान वग़ैरा कराते रहते हैं ताकि आफ़ात दूर रहें, इन का माख़ज़ भी येही ह़दीस है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/91)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ग्यारहवीं शरीफ़ जैसा अ़ज़ीमुश्शान सवाब वाला काम साबित हो जाने के बावुजूद कोई नादाना इस बा बरकत और अल्लाह पाक की रह़मतों की बरसात वाली मह़फ़िले ग़ौसिया (यानी ग्यारहवीं शरीफ़) से मुसलमानों को रोके या इस के बारे में लोगों के दिलों में ग़लत़ फ़हमियां डाले, उसे सोचना चाहिए कि वोह इन आ़शिक़ाने औलिया को कितना बड़े सवाब के काम से रोक रहा है ह़ालांकि दुनिया में लोगों की बड़ी तादाद गुनाहों और फ़ुज़ूलिय्यात में मश्ग़ूल है, चाहिए तो येह था कि उन्हें नेकी की दावत दे कर राहे सुन्नत पर चलाने की कोशिश की जाती न कि आ़शिक़ाने औलिया और आ़शिक़ाने ग़ौसे आज़म को इस सवाब के काम से रोक कर उन के दिलों में शुकूको शुब्हात डाल कर बदज़न करने की कोशिश की जाती है। ऐसे नादान लोगों को डर जाना चाहिए कि पारह 25, सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़ की आयत नम्बर 36 और 37 में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿۳۶﴾ وَ اِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और जो रह़मान के ज़िक्र से मुंह फेरे तो हम उस पर एक शैत़ान मुक़र्रर कर देते हैं तो वोह उस का साथी रहता है। और बेशक वोह शयात़ीन उन को रास्ते से रोकते हैं और वोह येह समझते रहते हैं कि वोह हिदायत याफ़्ता हैं।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! रिज़ाए इलाही और ह़ुसूले सवाब के लिए 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को बीबी आमिना رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के लाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुनिया में तशरीफ़ लाने की ख़ुशी में अपने घर को सजाने

और महफ़िले मीलाद शरीफ़ मनाने वाले को रोकने वाला और ग्यारहवीं शरीफ़ में हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की फ़ातिहा व नियाज़ कि जिस में तिलावते क़ुरआने करीम, नाते रसूले करीम और ज़िक्रुल्लाह वग़ैरा होता है उस से रोकने वाला इस हुक्मे क़ुरआनी : ﴿ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ﴾ (پ29، القلم:12) तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : "भलाई से बड़ा रोकने वाला, ह़द से बढ़ने वाला, बड़ा गुनाहगार।" में दाख़िल है। यक़ीनन ग्यारहवीं शरीफ़ में होने वाले नेक काम मसलन तिलावत और नात, अल्लाह पाक के ज़िक्र की अफ़ज़ल तरीन अक़्साम में से हैं और इन नेक कामों से रोकना ह़द से बढ़ने के सबब गुनाह का काम है।

"ग़ौस" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से ग्यारहवीं शरीफ़ के तीन वाक़िआ़त

﴾1﴿ आला ह़ज़रत और ग्यारहवीं शरीफ़ का तबर्रुक (वाक़िआ़)

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ एक साह़िब फ़रमाते हैं कि आप की मजलिस में ग्यारहवीं शरीफ़ का लंगर तक़्सीम हुवा तो जैसे बांटने से शीरीनी वग़ैरा बे एह़तियात़ी से नीचे गिर जाती है हम ने देखा कि आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पलंग से नीचे उतर रहे हैं और निहायत ही अदब और ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ से ज़मीन पर सर झुका रहे हैं, हम ह़ैरान हैं कि येह क्या माजरा है ! ग़ौर से देखा तो आप नीचे गिरी हुई शीरीनी को मुंह में ला रहे हैं, हम ने अ़र्ज़ की आप हमें हुक्म फ़रमाते हम उठा लेते, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तबर्रुक की शीरीनी के अदब के ख़िलाफ़ था कि उसे बे एतिनाई (यानी बे परवाई) से ह़ासिल करूं। (बरकाते ग्यारहवीं, स. 37 ता 38 बतग़य्युरिन क़लील) अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ऐ आशिक़ाने औलिया ! سُبْحٰنَ الله ! जिस चीज़ को नेकों से निस्बत हो जाए वोह चीज़ बा बरकत हो जाती है तो फिर उस चीज़ का क्यूं एहतिराम न किया जाए, "फ़तावा रज़विय्या शरीफ़" में येह भी लिखा है कि "नियाज़ (यानी फ़ातिहा) का ऐसे खाने पर होना बेहतर है जिस का कोई हिस्सा फेंका न जाए। (फ़तावा रज़विय्या, 9/612) बल्कि हर हिस्सा ही खा लिया जाए।" लिहाज़ा हमें भी चाहिए कि नियाज़ व फ़ातिहा दिलाई गई ग़िज़ा को ज़ाएअ़ न होने दें, इस का ज़ियादा से ज़ियादा अदब किया करें क्यूंकि "बा अदब बा नसीब और बे अदब बे नसीब।"

ख़ानदाने आला हज़रत और ग्यारहवीं शरीफ़ का तरीक़ा

इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़ातिहा, ईसाले सवाब का नाम है जो कुछ क़ुरआने मजीद व दुरूद शरीफ़ से हो सके पढ़ कर सवाब नज़्र करे और हमारे ख़ानदान का मामूल येह है कि सात बार दुरूदे ग़ौसिया, फिर एक एक बार अलह़म्द शरीफ़ व आयतुल कुर्सी, फिर सात बार सूरए इख़्लास, फिर तीन बार दुरूदे ग़ौसिया। दुरूदे ग़ौसिया येह है : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدَنِ الْجُوْدِ وَ الْكَرَمِ وَ اٰلِهٖ وَ بَارِكْ وَسَلِّمْ और फ़क़ीर इतना ज़ाइद करता है : وَعَلٰى اٰلِهِ الْكِرَامِ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ وَ اُمَّتِهِ الْكَرِيْمَةِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ। (फ़तावा रज़विय्या, 23/748)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत का मुबारक अन्दाज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आशिक़े ग़ौसे आज़म, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद भी हैं और आप को कई सिल्सिलों से ग़ौसे

पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का मुरीद बनाने की इजाज़त भी है। आप का बर्सों से मामूल है कि हर इस्लामी महीने की 11 तारीख़ को ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ का एहतिमाम फ़रमाते हैं और इस की तरग़ीब भी दिलाते रहते हैं। आप इरशाद फ़रमाते हैं : घरों में हर महीने ग्यारहवीं शरीफ़ का एहतिमाम करना चाहिए। हर महीने नियाज़ में कोई उ़म्दा ग़िज़ा पका ली जाए। यूं तो हर घर में उ़म्दा ग़िज़ाएं पकाई ही जाती होंगी लेकिन ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातिह़ा के लिए एक दिन ख़ास कर के पकाई जाए जिस में सब बच्चों को भी पता हो कि आज ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की नियाज़ है। फिर बच्चे भी हर महीने ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की नियाज़ के लिए वालिदा से मुत़ालबा करते रहेंगे और ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की मह़ब्बत बच्चों के दिलो दिमाग़ में बैठ जाएगी।

(मदनी मुज़ाकरा : 8 रबीउ़ल आख़िर 1440 हिजरी, 15 दिसम्बर 2018)

ग्यारहवीं शरीफ़ की बरकतें

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इरशाद फ़रमाते हैं : हो सके तो हर रोज़ (नफ़ा पर नहीं बल्कि) अपनी बिकरी (Sale) का चौथाई फ़ीसद (यानी चार सौ रुपिये पर एक रुपिया) और मुलाज़मत करने वाले तनख़्वाह का माहाना कम अज़ कम एक फ़ीसद सरकारे ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की नियाज़ के लिए निकाल लिया करें, ईसाले सवाब की निय्यत से इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें اِنْ شَآءَ اللہ इस की बरकतें ख़ुद ही देख लेंगे।

(फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, स. 17)

ऐ जमीले क़ादिरी हुशियार बाश
उ़म्र भर छूटे न येह तुझ से नियाज़

(क़बालए बख़्शिश, स. 143)

﴾2﴿ ग्यारहवीं शरीफ़ का आशिक़ (वाक़िआ)

ताजदारे गोलड़ा ह़ज़रते पीर मेहर अ़ली शाह साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे त़ालिबे इ़ल्मी के दिनों में एक बुज़ुर्ग "शकरकोट" के मक़ाम पर रहते थे। उन का नाम बाबा नूरे इलाही मश्हूर था और वोह क़ादिरिय्या निस्बत रखते थे। आप हर महीने की ग्यारह तारीख़ को एक बकरी या दुम्बा जो अपने हाथ से पाला हुवा होता ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की फ़ातिह़ा (यानी ग्यारहवीं शरीफ़) के लिए ज़ब्ह़ करते और साथ ह़ल्वा और रोटी भी पका कर फ़ुक़रा को खिलाते। ख़ास त़ौर पर इस नियाज़मन्द ख़ादिमुल औलिया को (यानी मुझे) इसरार और एहतिमाम के साथ शरीके दावत फ़रमाते। एक दिन मैं शकरकोट से अंगा (जहां मैं पढ़ता था, वहां) जा रहा था। रास्ते में दूर से मैं ने देखा कि वोही सफ़ेद रीश बुज़ुर्ग बकरा चरा रहे थे और मह़ब्बत व शौक़ के आ़लम में उस के साथ खेल रहे थे। कभी कन्धे पर उठाते कभी ज़मीन पर रख देते, मैं ने क़रीब जा कर सुना तो कह रहे थे "**मेरे मह़बूब दिया लैलिया** (यानी मेरे मह़बूब के बकरे)।" उस वक़्त मेरे दिल में ख़याल आ रहा था कि इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के बाद गोशए तन्हाई में बैठ कर किताबों के मुत़ालए में मश्ग़ूल रहूंगा और तदरीस वग़ैरा न करूंगा। जब रास्ते से हट कर उन से मिलने के लिए मुतवज्जेह हुवा तो मुझे देखते ही फ़रमाने लगे : "**इ़ल्म ह़ासिल कर के तदरीस करें**" येह बात कह कर फिर उसी बकरे के साथ गुफ़्तगू में मश्ग़ूल हो गए। बुज़ुर्ग मौसूफ़ ग्यारहवीं शरीफ़ का बड़ा एहतिमाम फ़रमाते थे और ह़ज़रते ग़ौसे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ज़ाते पाक से काफ़ी राबित़ा ह़ासिल था। (اعلاء کلمۃ اللہ فی بیان وما اھل بہ لغیر اللہ، ص32 ملخصاً)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾3﴿ मुफ़्तिए आज़मे हिन्द और ग्यारहवीं शरीफ़ (वाक़िआ)

एक ग़रीब आदमी ने हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, शहज़ादए आला हज़रत, मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अपने घर दावत की। जब हज़रत उस के घर तशरीफ़ ले गए तो उस ग़रीब ने दो प्याली चाय बनाई और हज़रत के सामने पेश की। हज़रत ने चाय पी और इस के बाद उस ग़रीब के घर में बने हुए चावलों के पतीले पर हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की फ़ातिहा दी। फ़ातिहा देने के बाद हज़रत ने ताकीद फ़रमाई कि इस पतीले पर पर्दा डाल दिया जाए और इस में झांक कर न देखा जाए, बस अन्दर से निकाल कर सब को देते जाओ। हज़रत ने वहां मौजूद तमाम हाज़िरीन को खाना खाने का हुक्म दिया। उस वक़्त वहां बहुत से लोग मौजूद थे, हज़रत ने फ़रमाया कि पांच पांच आदमी कर के खाना खाओ। चुनान्चे एक बड़ी सेनी (यानी पीतल या तांबे वग़ैरा के एक बड़े बरतन) में पांच आदमियों का खाना निकाला गया और लोग खाना खाने लगे। वोह पतीला जिस में बहुत थोड़ा सा खाना था, उस से पांच पांच कर के लोग खाना खाते रहे और सैर होते रहे, यहां तक कि बस्ती के तमाम हाज़िरीन ने खाना खा लिया। इस के बाद हज़रत ने फ़रमाया कि जाओ देखो, अगर पड़ोस में कोई ग़रीब औ़रत या मर्द हो तो उसे भी खाना दे दो। चुनान्चे क़स्बे की बहुत सी औ़रतों और मर्दों को भी वोह खाना खिलाया गया, मगर पतीले का खाना ख़त्म न हुवा। जब सब लोग खा कर फ़ारिग़ हो गए और पतीले से पर्दा हटाया गया तो पतीला वैसे ही भरा हुवा था जैसे पहले था। वहां मौजूद तमाम लोग येह करामत देख कर हैरान रह गए। (मुफ़्तिए आज़मे हिन्द की करामात,स . 106)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की करामत और ग्यारहवीं शरीफ़ के खाने की बरकत के इस वाक़िए से किसी को शैतानी वस्वसों में मुब्तला नहीं होना चाहिए। अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े और तुफ़ैल आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के किसी वली से इस त़रह़ की करामात ज़ाहिर हो सकती हैं। क्यूंकि औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की करामात अपने नबी का मोजिज़ा होती हैं कि इन्ही की पैरवी की बरकत से येह मक़ाम मिलता है। (فیوض الباری،2/274ماخوذاً) उम्मत के वली से इस त़रह़ की करामत का ज़ाहिर होना मामूली सी बात है ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मोजिज़ा है कि थोड़ा खाना कई लोगों को काफ़ी हो गया जैसा कि

चन्द का खाना बहुतों को काफ़ी हो गया...

ह़ज़रते सुहैब رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए थोड़ा सा खाना पकाया और दावत देने के लिए ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। मारे शर्म के कुछ अ़र्ज़ न कर सका और ख़ामोश खड़ा रहा। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देखा, मैं ने इशारे से खाने के लिए चलने की इल्तिजा की, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ह़ाज़िरीने मजलिस के बारे में) फ़रमाया : और येह लोग ? मैं ने अ़र्ज़ की, नहीं। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए और मैं उसी मक़ाम पर खड़ा रहा। हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर मेरी त़रफ़ नज़र फ़रमाई। मैं ने इसी त़रह़ फिर इशारतन अ़र्ज़ की : फ़रमाया : येह लोग ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। दूसरी या तीसरी मरतबा के जवाब में मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां (यानी उन्हें भी ले चलिए)। ह़ालांकि खाना सिर्फ़ थोड़ा सा था जो मैं ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के लिए तय्यार किया था। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन तमाम

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم के साथ तशरीफ़ लाए, सब ने अच्छी त़रह़ खाया और खाना फिर भी बच गया। (معجم کبیر 8/45، حدیث:7321)

फ़रमाने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आज़म ! जिन ग्यारहवीं वाले मुर्शिद की हम ग्यारहवीं मनाते हैं हमें उन की सीरत भी अपनाने की कोशिश करनी चाहिए और उन के इरशादात पर भी अ़मल करना चाहिए, आइए ! हु़ज़ूर ग़ौसे आज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का एक इरशाद सुनिए, ग़ौसे पाक फ़रमाते हैं : "अल्लाह पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिए और सच्चाई का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए।"

(فتوح الغیب مع قلائد الجواہر، ص44 ملخصًا)

ऐ ग़ौसे पाक के दीवानो ! निय्यत कर लीजिए कि आज के बाद कोई गुनाह नहीं करेंगे, नमाज़ें क़ज़ा नहीं करेंगे, बिला इजाज़ते शरई जमाअ़त भी नहीं छोड़ेंगे, फ़र्ज़ रोज़े नहीं छोड़ेंगे, ज़कात पूरी अदा करेंगे, ह़ज फ़र्ज़ हो गया तो अदाएगी में देर नहीं करेंगे, झूट नहीं बोलेंगे, दाढ़ी नहीं मुन्डाएंगे और एक मुठ्ठी से नहीं घटाएंगे, फ़िल्में ड्रामे नहीं देखेंगे, गाने बाजे नहीं सुनेंगे, बे पर्दा औ़रतों को नहीं देखेंगे, सूद नहीं खाएंगे, रिश्वत का लेन देन नहीं करेंगे, शराब नहीं पिएंगे, मां बाप की ना फ़रमानी नहीं करेंगे क्यूंकि येह सब अल्लाह पाक की ना फ़रमानियां हैं और हमारे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का फ़रमान है कि अल्लाह पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिए। जब अल्लाह पाक की रह़मत से गुनाहों से बचेंगे, ख़ूब नेकियां करेंगे, नेक आमाल पर अ़मल करेंगे, क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे, आशिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करेंगे, तो अल्लाह पाक और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल हो जाने की सूरत में ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के पीछे पीछे जन्नत में जाएंगे। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ

ग्यारहवीं शरीफ़ के बारे में चन्द ग़लत़ फ़हमियों का इज़ाला

﴾1﴿ **ग़लत़ फ़हमी :** ग्यारहवीं की नियाज़ ग्यारह तारीख़ को ही की जा सकती है, किसी और दिन नहीं।

जवाब : ऐसा बिल्कुल नहीं, अहले सुन्नत की किसी भी क़ाबिले एतिमाद किताब में ऐसा नहीं लिखा हुवा, अगर कोई कहे तो वोह कहने वाले की ग़लत़ी है। ग्यारहवीं शरीफ़ का मत़लब "सरकारे बग़दाद ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ईसाले सवाब करना" है और ईसाले सवाब साल में किसी भी वक़्त किया जा सकता है।

﴾2﴿ **ग़लत़ फ़हमी :** ग्यारहवीं शरीफ़ मनाने वाले इस को फ़र्ज़ व वाजिब समझते हैं।

जवाब : येह भी ग़लत़ बात है इसी रिसाले में इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़वाले से येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ कर दी गई है कि ग्यारहवीं शरीफ़ करना मुस्तह़ब (यानी सवाब वाला काम) है। लिहाज़ा अगर कोई न करे तो बिल्कुल गुनाहगार नहीं होगा अलबत्ता ग्यारहवीं करने को गुनाह समझने वाला शरीअ़त पर बोहतान (यानी ग़लत़ इल्ज़ाम) लगाने के सबब ज़रूर गुनाहगार होगा। और हां ! ग्यारहवीं शरीफ़ ईसाले सवाब के एतिबार से सुन्नत है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने भाई को नफ़ा पहुंचा सके तो चाहिए कि उसे नफ़ा पहुंचाए। (مسلم، ص931، حدیث:5727)

﴾3﴿ **ग़लत़ फ़हमी :** ग्यारहवीं के खाने को सामने रख कर फ़ातिह़ा दिलाना ज़रूरी है ?

जवाब : ग्यारहवीं शरीफ़ या किसी भी बुज़ुर्ग की फ़ातिह़ा दिलाने के लिए खाने का सामने रखना ज़रूरी नहीं है, इसे ज़रूरी समझना ग़लत़ी है और सामने रख कर

फ़ातिहा पढ़ने को ग़लत़ समझना भी ग़लत़ी है क्यूंकि फ़ातिहा शरीफ़ दिलाने के मौक़े पर जो भी चीज़ें सामने रखी जाती हैं, वोह ह़लाल और पाक ग़िज़ाएं ही होती हैं, फिर उन पर क़ुरआनी आयाते मुबारका पढ़ी जाती हैं और नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा जाता है, जिन पाकीज़ा चीज़ों पर अल्लाह पाक का नाम लिया जाए और जिन जानवरों को अल्लाह पाक के नाम पर ज़ब्ह़ किया जाए वोह ह़लाल हैं, चुनान्चे अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है : ﴿فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَیْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰیٰتِهٖ مُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۱۸﴾﴾ (پ8، الانعام: 118) तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो।

ग्यारहवीं शरीफ़ मनाने की बरकतें

ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद वह़ीद क़ादिरी मर्ह़ूम लिखते हैं : हम ने जिस को ग्यारहवीं शरीफ़ का पाबन्द पाया वोह मआ़शी लिह़ाज़ से फ़ारिग़ुल बाल (यानी ख़ुशह़ाल) हो जाता है और रूह़ानी तरक़्क़ी का क्या कहना। (बरकाते ग्यारहवीं, स. 20)

जब अपने ग़ौसे पाक की आती है ग्यारहवीं   सब को बहारे ताज़ा दिखाती है ग्यारहवीं
होती हैं धूम धाम से आ़लम में मह़फ़िलें   कानों को मदह़े ग़ौस सुनाती है ग्यारहवीं
अज्रे अ़ज़ीम बानिए मह़फ़िल को मिलते हैं   रह़मत ख़ुदाए पाक की लाती है ग्यारहवीं
होता है हर मुरीद का क्या बाग़ बाग़ दिल   गुल गुल्शने जमाअ़त दिखाती है ग्यारहवीं

(ग्यारहवीं औलिया व उ़लमा की नज़र में, स. 17)

मुरीदे ग़ौसे आज़म के लिए ख़ुशख़बरी

फ़रमाने ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه : अल्लाह पाक ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (बहजतुल असरार, स. 193 मुलख़्ख़सन)

सुना ला तख़फ़ तेरा फ़रमाने आ़ली   ग़ुलामों की ढारस बन्धी ग़ौसे आज़म

अलफ़ाज़ व मआ़नी : ला तख़फ़ : न डर

एक मुफ़ीद मश्वरा

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस दौर की बहुत बड़ी इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं, लाखों मुसलमानों की ज़िन्दगियां बदल गईं और वोह राहे सुन्नत पर चल पड़े, ख़ैर ख़्वाहिए मुस्लिम के जज़्बे के तह़त **मदनी मश्वरा** है कि आप भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सय्यिदी ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद हो जाइए और अगर आप पहले से किसी पीर साह़िब के मुरीद हैं तो बैअ़ते बरकत ह़ासिल करने के लिए त़ालिब हो जाइए, اِنْ شَآءَ الله ! दुनिया व आख़िरत में इस की ख़ूब बरकतें नसीब होंगी।

बज़रीए WhatsApp मुरीद बनिए

मुरीद होने या किसी और को मुरीद करवाने के लिए उन का नाम मअ़ वल्दियत और उ़म्र लिख कर इस नम्बर 9702626112 पर व्हाट्सएप कीजिए।

❀ इस नम्बर पर कॉल रिसीव नहीं होती, सिर्फ़ टेक्सट की सूरत में येह तफ़्सीलात भेजिए।

रोज़ी में बरकत का नुस्ख़ा

ताजिर अपनी रोज़ाना की बिक्री (SALE) का **एक फ़ीसद** जब कि तनख़्वाह पाने वाला अपनी हर तनख़्वाह की रक़म से कम अज़ कम **दो फ़ीसद** निकाले और माहाना ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ करे तो اِنْ شَآءَ الله उस की रोज़ी में बरकत होगी।

(अगर घर में नियाज़ करने में रूकावट हो तो किसी भी नेक काम में वोह रक़म ख़र्च कर दीजिए)

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025